खंड 'ख' – लेखन

1 अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद-लेखन गद्य की लघु विधा है। इसमें किसी वाक्य-विचार, अनुभव या दृश्य को कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करना होता है। छोटे-छोटे वाक्य और विचारों में क्रमबद्धता अनुच्छेद-लेखन की महत्वपूर्ण विशेषता है। यह बच्चों की सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाने का बहुत ही अच्छा माध्यम है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है–

- दिए गए विषय को 10 से 15 वाक्यों या 100 से 150 शब्दों में व्यक्त करना होता है।
- वाक्य छोटे-छोटे तथा एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।
- लेखन का आरंभ सीधे विषय से होता है। किसी भूमिका या परिचय की आवश्यकता नहीं होती है।
- विचारों का प्रवाह स्पष्ट होना चाहिए।
- उदाहरण का संकेत ही पर्याप्त होता है।
- भाषा सरल, स्पष्ट तथा मुहावरे युक्त होनी चाहिए।
- विषय के अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
- रोचकता बनाए रखना अनुच्छेद-लेखन की विशेषता होती है।
- अनुच्छेद के अंत में निष्कर्ष समझ में आ जाना चाहिए यानी विषय समझ में आ जाना चाहिए।
- यदि अनुच्छेद-लेखन के संकेत बिंदु दिए गए हैं तो उन्हीं के आधार पर विषय का क्रम तैयार करना चाहिए।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- अनुच्छेद किसी एक भाव या विचार या तथ्य को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है। इसमें अन्य विचार नहीं रहते।
- अनुच्छेद के वाक्य-समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।
- अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से संबद्ध होते हैं।
- अनुच्छेद एक स्वतंत्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।
- उच्च कोटि के अनुच्छेद-लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरंभ, मध्य और अंत आसानी से व्यक्त हो जाए।
- अनुच्छेद सामान्यत: छोटा होता है, किंतु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।

विभिन्न विषयों पर अनुच्छेद-लेखन के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

(CBSE 2018)

संकेत बिंदु– • निराशा • अभिशाप • दृष्टिकोण-परिवर्तन • सकारात्मक सोच।

मन की ताकत का अंदाज़ा लगाना बहुत कठिन है। यह सच है कि यह हमसे महान से महान कार्य करवा सकता है तो जघन्य-से-जघन्य अपराध करने के लिए भी मजबूर कर सकता है। इसे बहुत ही चंचल माना जाता है। यदि जीवन में सफल होना है तो हमें मन के वश में नहीं, अपितु मन को अपने वश में करना आना चाहिए। मन को एकाग्र करके ही सफलता प्राप्त की जा सकती है और यदि कभी किसी कार्य में असफलता या हार का सामना करना पड़ता है तो मन को निराशा के चंगुल से बचाना चाहिए, क्योंकि निराशावादी मन हार मानकर बैठने पर मजबूर कर देता है। मन की स्थिति हमारे दृष्टिकोण को, हमारे बल व निश्चय को बदलने की ताकत रखती है। मन से हारा हुआ व्यक्ति कभी प्रयास नहीं कर सकता और यदि वह नकारात्मक विचारों के साथ प्रयास करता भी है तो उसकी जीत की संभावना नहीं रहती। वहीं दूसरी ओर जब तक मन से हार नहीं माना जाए तथा सकारात्मक दृष्टिकोण से प्रयास किया जाए,

तो जीत हासिल होकर ही रहती है। अत: हमारे जीवन की सफलता-असफलता, हार-जीत हमारी मन:स्थिति पर निर्भर करती है। मन से आशावान बने रहेंगे तो अन्य परिस्थितियाँ व वातावरण भी हमारे अनुकूल होकर हमें लक्ष्य-प्राप्ति में सहायक हो जाएँगे।

2. भारतीय किसान के कष्ट

(CBSE 2018)

संकेत बिंदु– • अन्नदाता की कठिनाइयाँ • कठोर दिनचर्या • सुधार के उपाय।

अपने देश की धरती को मातृभूमि का नाम दिया जाता है, क्योंकि उसमें जन्म लेकर, उसका अन्न-जल ग्रहण करके हम जीवन व्यतीत करते हैं, किंतु मातृभूमि की कोख से अन्न पैदा करने की मेहनत जो किसान करता है, वह भी समान रूप से पूजनीय है। अनाज उगाने के लिए किसान को किन कष्टों को सहना पड़ता है, हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। वह कठोर दिनचर्या का पालन करता है। उसके लिए धूप-छाँव, सरदी-गरमी में कोई अंतर नहीं। उसे हर हाल में निरंतर मेहनत करनी होती है। अपना खून-पसीना एक करके वह फसलें उगाता है। बीज बोने से लेकर फसल काटने तथा बाज़ार में पहुँचाने तक उसका जीवन पिसता ही रहता है। यही कारण है कि हर वर्ष बड़ी संख्या में किसानों की आत्महत्या के समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। बेचारा गरीब किसान कर्ज़ लेकर खेती करता है और यदि कुछ हाथ न लगे तो परिवार का निर्वाह करना भी उसके लिए असंभव हो जाता है। ऐसे में किसानों के लिए उचित नीतियाँ बननी चाहिए तथा उन पर सख्ती से अमल भी होना चाहिए। सरकार द्वारा उसे अच्छे बीज, खाद व अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त फसल बीमा योजना भी दी जानी चाहिए ताकि वह निश्चिंत होकर अपना जीवन-निर्वाह कर सके।

3. स्वच्छता स्वास्थ्य की जननी है

(CBSE 2018)

संकेत बिंदु– • क्यों • बदलाव • हमारा उत्तरदायित्व • स्वच्छता आंदोलन।

स्वच्छता के अभाव में स्वास्थ्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस पर्यावरण में हम साँस लेते हैं, उठते-बैठते हैं, उसका प्रभाव हमारे शरीर व मन-मस्तिष्क पर निश्चित ही पड़ता है। वातावरण स्वच्छ होगा तो शरीर के साथ-साथ मन को भी प्रसन्न व कार्यशील बनाएगा, जबकि अस्वच्छ वातावारण से तन-मन रोगी महसूस करने लगेंगे। गंदगी में पनपने वाले हज़ारों अदृश्य कीटाणु शरीर को रोगी बनाते हैं। अत: मन-मस्तिष्क व स्वास्थ्य के लिए शरीर का स्वस्थ रहना व शरीर के स्वास्थ्य के लिए वातावरण को स्वच्छ रखना बेहद ज़रूरी है। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिनिधित्व में जब से स्वच्छता आंदोलन चला है, वातावरण में भले ही बहुत बदलाव न आया हो, किंतु लोग सचेत अवश्य हो गए हैं। बच्चा-बच्चा आज स्वच्छता को महत्वपूर्ण मानता है। वहीं गंदगी फैलाने को बुरा माना जाने लगा है। अनेक क्षेत्रों में अनगिनत लोग व संस्थाएँ इस आंदोलन को जारी रखे हुए हैं। जैसे-जैसे लोगों में जागरूकता बढ़ेगी, सब स्वच्छता के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी समझेंगे, वैसे-वैसे वातावरण में सुधार भी दिखाई देने लगेगा। किसी भी बड़े परिवर्तन की शुरुआत छोटे स्तर से ही होती है और वह हो चुका है। अब आवश्यकता है सभी को अपना उत्तरदायित्व समझने व निभाने की ताकि हम अपने भारत को प्रदूषण मुक्त बनाकर रोग मुक्ति की ओर कदम बढ़ा सकें।

4. व्यायाम का महत्व

संकेत बिंदु– • आवश्यकता • लाभ • चयन।

कहावत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। स्वस्थ मन में अच्छे विचार आते हैं, जिन्हें अपनाकर हम सकारात्मक रह सकते हैं। जैसे सुबह टहलने से शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है। इसी तरह हमें थोड़ा व्यायाम ज़रूर करना चाहिए, लेकिन ध्यान रखें कि खाना खाने के बाद व्यायाम नहीं करना है। छोटे बच्चों को थोड़ा टहलना चाहिए। समय पर खाना-पीना चाहिए। सभी काम समय पर करके व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। व्यायाम करने से धमनियाँ सही काम करती हैं और शरीर के सभी अंग ठीक रहते हैं तथा सही काम करते हैं। सुबह पार्क में टहलने से आँखों की ज्योति बढ़ती है। इस प्रकार हमें स्वस्थ और खुश रहना चाहिए। व्यायाम के अनेक प्रकार हैं। अपने शरीर की आवश्यकता के अनुसार हमें ऐसा व्यायाम चुनना चाहिए जो हमारी शारीरिक आवश्यकता पूर्ण करने के अलावा हमारी पहुँच में हो और साथ ही यदि यह हमारे लिए रुचिकर भी हो तो सोने पे सुहागा होगा।

5. प्रदूषण की समस्या

संकेत बिंदु– • प्रदूषण एक अभिशाप • हानियाँ • संदेश।

आधुनिक काल में प्रदूषण की समस्या सबसे बड़ा अभिशाप है। पर्यावरण में मुख्य रूप से तीन प्रकार के प्रदूषण फैल रहे हैं और इनके बढ़ते स्तर से संपूर्ण विश्व प्रभावित हो रहा है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण का खतरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता

ही जा रहा है। कल-कारखानों से निकलने वाला औद्योगिक कचरा नदियों और सागरों के हवाले होकर जल प्रदूषण का कारण बन जाता है। नतीजा यह होता है कि नदियों का पानी पीने के लायक नहीं रह जाता है। इस पानी से यदि फसलों की सिंचाई होती है तो रासायनिक अपशिष्ट फसलों में प्रविष्ट होकर खाद्य पदार्थों को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बना देते हैं। जलचरों का जीवन भी संकट में पड़ जाता है। मोटर-गाड़ियों तथा कारखानों की चिमनियों से उठने वाला धुआँ वायु प्रदूषण का कारण बनता है। इसके जरिए धुआँ में कार्बन डाइ-ऑक्साइड, कार्बन मोनो-ऑक्साइड, सल्फर और लेड जैसे हानिकारक तत्व हवा में घुलकर वातावरण को विषैला बना देते हैं। जो साँस के साथ हमारे शरीर में जाते हैं और हमारे शरीर को बीमार कर देते हैं। फलतः हमें अस्थमा जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं। बारिश के पानी में घुलकर ये फसलों और वनस्पतियों को भी नुकसान पहुँचाते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता समाप्त हो जाती है और वह बंजर हो जाती है। वायुयान, कल-कारखाने, मोटर-गाड़ियाँ, गाड़ियों के हॉर्न तथा शादी-पार्टियों में लगने वाले डीजे आदि के शोर-शराबे से ध्वनि प्रदूषण होता है, जिससे उच्च रक्तचाप, बहरापन आदि रोग हो जाते हैं। कैंसर, ब्रोन्काइटिस तथा हृदय के खतरनाक रोगों का कारण बनने वाले प्रदूषण के खिलाफ संपूर्ण विश्व-समुदाय को एकजुट होकर संघर्ष करना चाहिए।

6. वृक्षारोपण का महत्व

(CBSE 2019)

संकेत बिंदु– • वृक्ष बिना जीवन बेकार • उपयोगिता • सहायता • सुझाव।

वृक्षों के बिना धरती कैसी होगी, यह हम किसी मरुस्थलीय प्रदेश के दर्शन करके सहज ही समझ सकते हैं। वृक्ष हमारे लिए अनेक प्रकार से लाभदायक हैं। गरमी की तपती दोपहर में वृक्षों की शीतल छाया का सुख तो केवल वृक्षों से ही प्राप्त हो सकता है। छाया के अलावा वृक्षों से हमें फल-फूल, जड़ी-बूटी, इमारती लकड़ी एवं ईंधन आदि अनेक आवश्यक सामग्रियाँ प्राप्त होती हैं। वृक्षों से वायु प्रदूषण के खिलाफ़ लड़ाई लड़ने में मदद मिलती है। वनों से मानसून का चक्र भी नियमित होता है तथा मृदा के क्षरण पर भी रोक लगती है और जल संरक्षण भी संभव होता है। बेल और पीपल जैसे वृक्षों को पवित्र माना जाता है। लोग पवित्र वृक्षों की पूजा करते हैं। बाढ़ की विभीषिका को रोकने तथा मिट्टी को उर्वर बनाए रखने में वृक्षों का अमूल्य योगदान है। वृक्षों के इस व्यापक महत्व को देखते हुए सरकार द्वारा हर वर्ष वन महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस मौके पर स्कूलों तथा कॉलेजों में भी वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। हमें भी अधिक-से-अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए और इन वृक्षों से प्राकृतिक सौंदर्य तथा स्वास्थ्य का उपहार प्राप्त करना चाहिए।

7. खेलों का महत्व

(CBSE 2011)

संकेत बिंदु– • उपयोगिता • प्रकार • लाभ • नैतिक मूल्यों में वृद्धि • निष्कर्ष।

'जैसा तन वैसा मन' यह कहावत जानते तो सभी हैं, परंतु जो इसका पालन करते हैं, वे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देते हैं। खेलों का महत्व और उपयोगिता आधुनिक जीवन में और भी अधिक बढ़ गई है। स्कूलों तथा कॉलेजों में भी अब खेलों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। खेल कई प्रकार के होते हैं। कुछ खेल घर में भी खेले जा सकते हैं तो कुछ ऐसे हैं, जिनको खेलने के लिए मैदान की आवश्यकता होती है। वैसे छात्रों के लिए तो मैदान में खेले जाने वाले खेल ही अधिक लाभदायक होते हैं। कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट, बैडमिंटन, खो-खो, बॉस्केटबॉल आदि ऐसे ही खेल हैं। इन्हें खेलने से मनोरंजन भी होता है और साथ-ही-साथ व्यायाम भी। खेल हमारे शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के साथ-साथ हमारे भीतर कई अच्छे और आवश्यक गुणों का भी विकास करते हैं। खेलों से प्रतियोगिता तथा संघर्ष की भावना सहज ही सीखी जा सकती है। सामूहिक ज़िम्मेदारी, सहयोग और अनुशासन की भावना का कोषागार खेलों में ही छिपा है। जो देश खेलों में अव्वल होते हैं, वे विकास की दौड़ में भी अग्रणी रहते हैं। ओलंपिक तथा राष्ट्रमंडलीय खेल स्पर्धाओं के द्वारा 'वसुधैव कुटुंबकम्' का मंत्र प्रत्यक्ष होता हुआ दिखता है।

8. मदिरापान : एक सामाजिक कलंक

संकेत बिंदु– • भूमिका • मदिरापान के दुष्परिणाम • पक्ष में तर्क • मदिरापान का विरोध।

मदिरापान सब व्यसनों की जड़ है। जब मदिरा भीतर जाती है तो हमारे सारे संस्कार, विचार, विवेक, सद्भाव बाहर निकल जाते हैं। किसी ने सच ही कहा है कि जहाँ शैतान स्वयं नहीं पहुँच पाता, वहाँ मदिरा को भेज देता है यानी मदिरा आदमी को शैतान बना देती है। मदिरा का सबसे पहला हमला इसको पीने वाले पर होता है। उसके फेफड़े, गुर्दे, लीवर तथा मस्तिष्क शिथिल पड़ जाते

हैं, जिससे उसे तरह-तरह की बीमारियाँ घेर लेती हैं। शराब पीने से घर में आर्थिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, जिससे घर में क्लेश रहता है। पत्नी व बच्चों को भूखों रहने तक की नौबत आ जाती है। शराब पीने से व्यक्ति सही और गलत में फर्क नहीं कर पाता है। अनेक अपराध शराब के नशे में ही किए जाते हैं। मदिरापान करने वाले अपने पक्ष में यह तर्क देते हैं कि इससे थकान दूर होती है, तनाव से मुक्ति मिलती है, ध्यान केंद्रित रहता है और काम करने में मन भी लगता है। परंतु ये सभी बातें झूठी और तथ्यहीन हैं। जिस शराब को पीने से हाथ-पैर लड़खड़ाते हों, भला उससे ध्यान कैसे केंद्रित रह सकता है? मदिरापान को केवल और केवल आत्म-नियंत्रण से रोका जा सकता है।

9. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

संकेत बिंदु– • अभ्यास की आवश्यकता • महान लोगों के उदाहरण • नियम।

जिस प्रकार रस्सी के बार-बार आने-जाने से कठोर पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं, उसी प्रकार बार-बार अभ्यास करने पर मूर्ख व्यक्ति भी एक दिन कुशलता प्राप्त कर लेता है। सारांश यह है कि निरंतर अभ्यास कम कुशल व्यक्ति को भी पूर्णतया पारंगत बना देता है। अभ्यास की आवश्यकता शारीरिक और मानसिक दोनों कार्यों में समान रूप से पड़ती है। लुहार, बढ़ई, सुनार, दर्ज़ी, धोबी आदि का अभ्यास साध्य है। ये कलाएँ बार-बार अभ्यास करने से ही सीखी जा सकती हैं। दर्ज़ी का बालक पहले ही दिन बढ़िया कोट-पैंट नहीं सिल सकता। विद्या-प्राप्ति के विषय में भी यही बात सत्य है। डॉक्टर को रोगों के लक्षण और दवाओं के नाम रटने पड़ते हैं। वकील को कानून की धाराएँ रटनी पड़ती हैं। जिस प्रकार रखे हुए शस्त्र की धार को जंग खा जाती है, उसी प्रकार अभ्यास के अभाव में मनुष्य का ज्ञान कुंठित हो जाता है और विद्या नष्ट हो जाती है। इस बात के अनेक उदाहरण हैं कि अभ्यास के बल पर मनुष्य ने विशेष सफलता पाई है। कालिदास वज्र मूर्ख थे, परंतु अभ्यास के बल पर संस्कृत के महान कवियों की श्रेणी में विराजमान हुए। वाल्मीकि अभ्यास से 'आदि-कवि' बने। यह तो अब स्पष्ट हो ही चुका है कि अभ्यास सफलता की कुंजी है, परंतु अभ्यास के कुछ नियम हैं। अभ्यास निरंतर नियमपूर्वक और समय-सीमा में होना चाहिए। यदि एक पहलवान एक दिन में एक हजार दंड-बैठक करे और दस दिन तक एक भी दंड-बैठक न करे तो इससे कोई लाभ नहीं होगा। अभ्यास परिश्रम के साथ-साथ धैर्य भी चाहता है।

10. अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत

संकेत बिंदु– • अमूल्य उपहार • महत्व • गया समय वापस नहीं आता • उदाहरण।

संसार में समय को सबसे अमूल्य वस्तु माना गया है। धन-संपत्ति खो जाने पर उसे परिश्रम करके दोबारा प्राप्त किया जा सकता है, पर समय खो जाने पर उसे पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वक्त निकल जाने और समझ आने पर व्यक्ति के पास हाथ मलने के अलावा और कोई रास्ता नहीं रह जाता है। यहाँ 'अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत' कहकर समय के महत्व को समझाया गया है तथा समय के सदुपयोग करने के महत्व को बताया गया है। इसके अलावा हमें सावधान करते हुए यह भी बताया गया है कि यदि हम समय पर कर्म करने से चूक जाएँगे, समय का सदुपयोग नहीं करेंगे तो बाद में यह अभिशाप बन जाएगा। समय का पंछी एक बार हाथ से छूट जाने के बाद दोबारा कभी भी पकड़ में नहीं आता। समय का सदुपयोग ही सफलता का प्रतीक है। समझदार व्यक्ति समय का एक पल भी बेकार नहीं करते। गांधी जी, अब्दुल कलाम जैसे महान पुरुष हमेशा समय के पाबंद रहते थे। वे कभी यह नहीं सोचते थे कि कल करेंगे। प्रकृति सदैव समय की पाबंद रहती है। यदि ऐसा न हो तो जीवन-चक्र बिगड़ जाएगा। समय ही वास्तव में जीवन और कर्म है।

11. समाचार-पत्रों का महत्व

(CBSE 2005, 2017)

संकेत बिंदु– • विश्व भर को जोड़ने का साधन • लोकतंत्र का प्रहरी • ज्ञान-वृद्धि और मनोरंजन का साधन • उपसंहार।

वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति देश-विदेश के समाचारों से अवगत रहना चाहता है। समाचार-पत्र एक ऐसा माध्यम है जो विश्व को एक कड़ी के समान जोड़े रखता है। यह हमारी ख़बर लेने का सबसे सस्ता और सरल माध्यम है। समाचार-पत्र लोकतंत्र का सजग प्रहरी है। यह लोकतंत्र तथा जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज़ उठाता है। सरकार की सफलता के क्रिया-कलापों का कच्चा-चिट्ठा खोलने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। समाचार-पत्रों में समसामयिक विषयों पर लेख, चर्चाएँ, मनोरंजन जगत की खबरें, विज्ञान की जानकारी, नए उत्पादों की जानकारी तथा खेल जगत के समाचारों की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। समाचार-पत्र जनजीवन की गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने का सस्ता और महत्वपूर्ण साधन है। इसकी इन्हीं खूबियों की वजह से कहा जाता है कि समाचार-पत्र समाज का दर्पण है।

12. कंप्यूटर : आज की ज़रूरत (CBSE 2010)

संकेत बिंदु– • बढ़ता प्रयोग • विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका • मनोरंजन एवं शिक्षा का माध्यम।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। वर्तमान समय में कंप्यूटर का स्थान विज्ञान के वरदानों में सर्वोपरि बनता चला जा रहा है। कंप्यूटर की विभिन्न क्षेत्रों में विशेष भूमिका है। यह हमारे सभी कामों में सहायता करता है। आज चारों ओर इसकी चर्चा होती है। यह आज के युग की ज़रूरत बन गया है। रेलवे, भवनों, मोटर-गाड़ियों आदि के डिज़ाइन तैयार करने में, कंप्यूटर ग्राफ़िक्स का व्यापक प्रयोग हो रहा है। आज अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में, औद्योगिक क्षेत्र में, युद्ध के क्षेत्र में तथा अन्य अनेक क्षेत्रों में इसका प्रयोग होता है। मनोरंजन के क्षेत्र में भी इसका योगदान कम नहीं है। बच्चों को भी तरह-तरह के खेल कंप्यूटर स्क्रीन पर खेलते देखा जा सकता है। बच्चे व युवा अपनी शिक्षा संबंधी सूचनाएँ भी इस पर इंटरनेट के जरिए प्राप्त करते हैं।

13. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं (CBSE 2010)

संकेत बिंदु– • पराधीनता का स्वरूप • पराधीनता का कलंक • स्वतंत्रता का महत्व।

'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' उक्ति का अर्थ है कि पराधीन व्यक्ति सपने में भी सुख का अनुभव नहीं कर सकता। पराधीन और परावलंबी के लिए तो सुख बना ही नहीं। पराधीनता एक प्रकार का अभिशाप है। पराधीनता की अवस्था में मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी तक छटपटाने लगते हैं। पराधीन व्यक्ति अथवा जाति अपने आत्म-सम्मान को सुरक्षित नहीं रख सकता। पराधीनता की कहानी दुख एवं पीड़ा की कहानी है जो किसी भी व्यक्ति, जाति अथवा देश की हो सकती है। जो व्यक्ति पराधीन होता है, उसका कोई अस्तित्व नहीं होता। उसका कोई भी अपमान कर सकता है। पराधीनता की पीड़ा को वही बता सकता है, जिस पर प्रतिबंध लगा दिया गया हो। किसी बंदी से पूछो कि पराधीनता का दुख क्या होता है? वह अपनी इच्छा से शुद्ध हवा में साँस तक नहीं ले सकता। भारत शताब्दियों तक पराधीनता की पीड़ा सहन करता रहा। भारतवासियों ने अपनी आज़ादी के लिए तमाम प्रयास किए। अंत में उनके किए प्रयास सफल हुए और देश आज़ाद हो गया। पराधीनता अगर अभिशाप है, तो स्वाधीनता वरदान।

14. इंटरनेट का उपयोग (CBSE 2011, 2019)

संकेत बिंदु– • विज्ञान और तकनीक की देन • जीवन के विविध क्षेत्रों में लाभ • हानियाँ: पुस्तकों और सोच-विचार की अपेक्षा इंटरनेट पर निर्भर • अपराधीकरण • कुछ सुझाव।

इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया लेकिन लोकप्रिय माध्यम है। इस माध्यम में प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविज़न, पुस्तक, सिनेमा और पुस्तकालय के सारे गुण हैं। इसकी पहुँच और गति आज दुनिया के किसी भी अख़बार या पत्रिका को हरा सकती है। इसमें पल-भर में अपने मतलब की जानकारी खोजी जा सकती है। साथ ही हम किसी से बातचीत (चैट) भी कर सकते हैं। अपना ब्लॉग बनाकर पत्रकारिता की किसी भी बहस के सूत्रधार बन सकते हैं। यूट्यूब से हम नृत्य-संगीत का आनंद ले सकते हैं। साथ ही खाना बनाने की प्रक्रिया भी सीख सकते हैं। इंटरनेट ने पढ़ने-लिखने वाले तथा शोधकर्ताओं के लिए संभावनाओं के नए आयाम गढ़ दिए हैं। इन विशेषताओं के साथ इसकी खामियाँ भी हैं। इसमें अनेक अश्लील पन्ने भी भर दिए गए हैं, जिससे बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ता है। युवा भी इनकी चपेट में आकर असामाजिक और अश्लील हरकत करते रहते हैं। इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए सरकार को इसकी सामग्री की गुणवत्ता पर नज़र रखनी चाहिए। आपत्तिजनक साइटों और पन्नों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। इस कदम से इसके दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

15. प्रकृति की रक्षा, मानव की सुरक्षा (CBSE 2011)

संकेत बिंदु– • मनुष्य प्रकृति का अंग • प्रकृति से खिलवाड़ • बढ़ता प्रदूषण • प्रकृति की रक्षा, मानव-जाति का कर्तव्य।

प्रकृति ईश्वर प्रदत्त एक बहुमूल्य भेंट है। प्रकृति ने मनुष्य को सदा दिया ही है। प्रकृति के बिना पृथ्वी पर रहने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज हमने आविष्कार किए, अद्भुत चीज़ों का निर्माण कर अपनी कल्पना को साकार किया। इससे मनुष्य ने प्रगति तो कर ली, किंतु प्रकृति के साथ वह खिलवाड़ कर बैठा। वनों के अत्यधिक कटाव से बाढ़, भूकंप की समस्या तो आई ही, दुर्लभ पशु-पक्षियों का अस्तित्व भी मिटने की कगार पर आ गया। रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से भूमि की उर्वरता पर प्रभाव पड़ा

झेलने के बावजूद मनुष्य अभी तक सुधरा नहीं है। प्रकृति अपना मैत्री-भाव छोड़कर विकराल होती जा रही है। समस्त मानव जाति का कर्तव्य है कि ईश्वर से प्राप्त इस अमूल्य भेंट की रक्षा करे। प्रकृति पर हम सभी आश्रित हैं। प्रकृति नहीं तो हम भी नहीं।

16. भ्रष्टाचार और जनता

(CBSE 2012)

संकेत बिंदु– • भ्रष्टाचार : अर्थ और कारण • जनता पर प्रभाव • भ्रष्टाचार से मुक्ति के उपाय।

आज के युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक ही सीमित होकर रह गया है। आज के समय में धन की लालसा इतनी बढ़ गई है कि व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ ही नज़र आता है। प्रत्येक व्यक्ति अधिक धनी बनना चाहता है, जिसके कारण वह अनैतिक मार्ग पर जाने में भी संकोच नहीं करता। वह येन-केन प्रकारेण धन कमाना चाहता है। भ्रष्टाचार फैलाने का सबसे बड़ा माध्यम दूरदर्शन है। विभिन्न चैनलों पर इतने अश्लील कार्यक्रम दिखाए जाते हैं कि किशोर तथा युवा वर्ग के लिए यह चरित्रहीनता सम्मान की वस्तु बन गई है। फैशन के नाम पर शरीर को 'उत्पाद' की तरह दिखाया जाता है। हमारी भ्रष्ट होती सामाजिक व्यवस्था के प्रमाण प्रतिदिन हो रहे फैशन शो हैं। अत: इन सबसे जनता पर बहुत गलत प्रभाव पड़ रहा है। आजकल पारिवारिक संबंधों में भी भ्रष्टाचार ने ज़हर घोल दिया है। समाज में मदिरा का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जिसे पीकर लोग अनेक प्रकार के अनैतिक कार्य करते हैं। इन सबकी रोक-थाम के लिए ज़रूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाया जाए, न्यायिक व्यवस्था को कठोर किया जाए। जनता में सकारात्मक जागरूकता लाकर ही हम भ्रष्टाचार रूपी दानव को जड़ से उखाड़ सकते हैं।

17. स्त्री-शिक्षा

(CBSE 2014)

संकेत बिंदु– • आवश्यकता • बढ़ते आँकड़े • संतान तथा समाज पर प्रभाव।

शिक्षा व्यक्ति के विवेक को उजागर कर उसे सही दिशा प्रदान करती है। मानव जाति की प्रगति का इतिहास शिक्षा के इतिहास के साथ ही लिखा गया है। शिक्षा नारी और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है, अन्यथा सही अर्थों में न प्रगति होगी और न शांति। भारत जैसे विकासशील देश में स्त्री-शिक्षा का महत्व इसलिए अधिक है कि वह देश की भावी पीढ़ी को योग्य बनाकर उसका उचित मार्गदर्शन कर सकती है। नेपोलियन ने कहा भी है– "मातृभूमि की प्रगति शिक्षित और समझदार माताओं के बिना असंभव है।" यह ठीक ही कहा गया है कि एक पुरुष को शिक्षा देने से वह अकेला शिक्षित होता है लेकिन एक स्त्री की शिक्षा से समूचा परिवार शिक्षित हो जाता है। प्राचीनकाल में स्त्रियों के लिए गुरुकुल की व्यवस्था नहीं होती थी, फिर भी हमें ग्रामी, विद्योत्तमा, लोपामुद्रा जैसी विदुषी स्त्रियों के दर्शन होते हैं। आधुनिक युग में स्त्रियों को शिक्षा के समान अधिकार प्राप्त हुए। स्त्री शिक्षा का महत्व लोगों को दिनों-दिन पता चलता जा रहा है और इसके आँकड़े बढ़ते जा रहे हैं। स्त्री की पहली भूमिका पुत्री के रूप में, दूसरी भूमिका पत्नी के रूप में तथा तीसरी और अंतिम भूमिका माँ के रूप में होती है। शिक्षित होकर वह इन तीनों भूमिकाओं के कर्तव्यों का सही रूप से पालन कर पाती है। शिक्षित माँ बच्चे का सही मार्गदर्शन कर उसके विचारों को परिपक्व करके उसके चरित्र-निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। समाज और राष्ट्र की प्रगति में वह पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलने में समर्थ है। आज हर क्षेत्र में शिक्षित नारी ने अपनी सफलता के झंडे गाड़ दिए हैं। विश्व की प्रगति में स्त्रियों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। एक शिक्षित स्त्री परिवार, समाज और पूरे राष्ट्र का गौरव होती है।

18. देशाटन

(CBSE 2013, 2014, 2017)

संकेत बिंदु– • देशाटन क्या है? • उपयोगिता और साधन • प्रोत्साहन के उपाय।

देशाटन करना मानव का आदिम शौक है। मानव-विकास भी इसी से हुआ है। इसका अर्थ होता है– चारों और आनंद के लिए घूमना। वह विभिन्न स्थलों के लोगों से मिलता है, उनकी भाषा-संस्कृति, वेश-भूषा, रीति-रिवाज़ और जीवन-शैली का परिचय प्राप्त करता है। इससे उसकी जिज्ञासा तो शांत होती ही है, ज्ञान और अनुभव में भी वृद्धि होती है। आज देशाटन ने एक उद्योग का रूप धारण कर लिया है। देश-विदेश में ऐसे अनेक स्थान हैं जो लाखों पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं। व्यक्ति प्रसिद्ध स्थलों, पहाड़ों, समुद्रों, नदियों आदि को देखकर विशिष्ट आनंद प्राप्त करता है। वह विश्व की अनेक संस्कृतियों की खूबियों से परिचित होता है। "वसुधैव कुटुंबकम्" की परिकल्पना भी देशाटन से साकार होती है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा और विभिन्न कंपनियों द्वारा

देशाटन अर्थात पर्यटन के लिए काफी सुविधाएँ और टिकट दरों में छूट दी जाती है, जिसका फायदा उठाकर सभी पर्यटन का आनंद ले सकते हैं। भारतीय पर्यटन विभाग 'अतुल्य भारत' नामक एक अभियान चलाता है, जिसका उद्देश्य भारतीय पर्यटन को विश्व मंच पर पदोन्नत करना है।

19. श्रम का महत्व

(CBSE 2014, 2015)

संकेत बिंदु– • तात्पर्य • सफलता का सोपान • भविष्य का निर्माण।

'श्रम' का अर्थ है– तन-मन से किसी कार्य को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील होना। श्रम के भेद हैं– मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम। जीवन में दोनों का अपना-अपना महत्व है। श्रम की महत्ता बताते हुए गांधी जी ने कहा था– "जो अपने हिस्से का परिश्रम किए बिना ही भोजन करते हैं, वे चोर हैं।" परिश्रमी व्यक्ति के पास मेहनत की सुनहरी कुंजी होती है जो भाग्य के बंद कपाट खोल देती है। संसार रूपी कर्म-क्षेत्र में निरंतर श्रम करके ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परिश्रम के बल पर ही मनुष्य ने समुद्र लाँघ लिया, आकाश नाप लिया और दुर्गम पहाड़ों पर भी चढ़ गया। श्रम ही मनुष्य का सच्चा मित्र है, इसीलिए कहा जाता है– "श्रमेव जयते।" मनुष्य अपने भविष्य का निर्माण श्रम से ही करता है। उसे आत्मविश्वास के साथ लक्ष्य रखकर आगे बढ़ना होगा ताकि सफलता उसके कदम चूमे। राष्ट्र की उन्नति श्रम के द्वारा ही संभव होती है। अमेरिका, जापान, चीन इस बात को सत्यापित करते हैं। भारतीय मनीषियों ने भी कहा है– "करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।।"

20. ग्राम्य जीवन

(CBSE 2016)

संकेत बिंदु– • प्राकृतिक वातावरण • विशुद्ध वस्तुएँ सुलभ • मनोरमता • उपसंहार।

"है अपना हिंदुस्तान कहाँ, यह बसा हमारे गाँवों में।"

हमारे कवियों ने अपनी कविता में भारतीय गाँवों के अत्यंत ही लुभावने चित्र खींचे हैं। किसी ने गाँवों को भारत की आत्मा कहा तो किसी ने उसे देश का हृदय-स्पंदन। भारत प्राचीनकाल से ही कृषि पर निर्भर रहा और देश की 70% से भी अधिक जनसंख्या गाँव में निवास करती है। अगर भारत की सच्ची तस्वीर देखनी हो, उसका महत्व जानना हो तो गाँव के दर्शन करने चाहिए। गाँव में प्रकृति अपने सबसे सुंदर रूप में दिखाई देती है– हरे-भरे खेत, बरसता सावन, सुगंधित हवा के झोंके, कूकती कोयल, नाचते मोर, हुक्का पीते या जुताई-बुआई करते किसान, बाजरे और मक्के की रोटी, झूमती सरसों, दूध-दही, मक्खन-घी, धन-धान्य से भरे खेत-खलिहान– यह है गाँव का मनोरम चित्र। विशुद्धता इसकी पहचान है। आज भी यहाँ की सारी वस्तुएँ मिलावट रहित होती हैं। गाँव का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन भी अत्यंत मनोहारी होता है। सभी ग्रामवासी भाईचारे के अटूट बंधन में बँधे एक-दूसरे के दुख-सुख में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते है, त्योहार मनाते हैं, सामाजिक परंपराएँ भी निभाते हैं। भारत के ग्राम्य जीवन में प्रकृति को हर लय-ताल पर झूमते, नाचते-गाते और गुनगुनाते देखा जा सकता है।

21. बढ़ते अपराध

(CBSE 2016)

संकेत बिंदु– • भारत में अपराधों का बढ़ना • नौकरी का न होना • संस्कारों का अभाव • न्याय में विलंब • सुझाव।

आज प्रिंट मीडिया हो या सोशल मीडिया, जिसे भी देखें चीख-चीखकर एक ही बात की पुष्टि करता है कि भारत में किस प्रकार अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है। पिछले कई वर्षों से महानगरों और यहाँ तक कि मँझोले शहरों में भी हर रोज़ दिन-दिहाड़े अपहरण, बलात्कार, हत्या, डकैती, दहेज के लिए बहु जलाना और जालसाज़ी आदि की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। आज लोगों ने इस प्रकार की घटनाओं को अपनी नियति मान लिया है। बढ़ते अपराधों का मुख्य कारण ग्रामीण युवकों का जीविका की तलाश में शहर की ओर पलायन है। गाँव की गरीबी उन्हें शहर के चकाचौंध में यहाँ रहने को मजबूर करती है। शहर आकर भी वे दिशाहीनता में भटकते रहते हैं। शहर में सबको नौकरी नहीं मिलती तब ऐसे आजीविकाहीन नौजवान अपराध के क्षेत्र की ओर अपने कदम बढ़ा लेते हैं। आज के युवकों में संस्कारों की भी कमी दिखाई देती है। वे असामाजिक कार्यों में संलिप्त होते चले जाते हैं। ऐसे लोग जब पकड़े जाते हैं तो पुलिस का भ्रष्टाचारी रवैया उनको सुधारने में नहीं, बल्कि उनको अपराधी बनाने में ज़्यादा ज़ोर देता है, कई बार तो पैसे लेकर वे उनको छोड़ देते हैं और कई बार न्याय व्यवस्था में कमी के कारण वे आजीवन कारावास में रहते हैं या जेल से

बाहर आकर अपराधी बन जाते हैं। ऐसे में बढ़ते अपराध पर अंकुश लगाने के लिए उन्हें उचित शिक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। अपराध नियंत्रण तथा अपराधियों को पकड़ने के लिए पुलिस के पास सभी प्रकार के आधुनिक यंत्र होने चाहिए। भ्रष्ट और बेईमान अफ़सरों को कड़ी सज़ा देनी चाहिए। इन उपायों से हम बढ़ते अपराध पर नियंत्रण पा सकते हैं।

22. सैनिकों के प्रति सद्भाव (CBSE 2017)

संकेत बिंदु– • सैनिक देश के रक्षक • त्याग और शौर्य के प्रतीक • सैनिकों से प्रेरणा।

सैनिक हमारे देश के प्रहरी होते हैं। अगर हम अपने देश में सुरक्षित और सुखी हैं तो यह हमारी भारतीय सेना के कारण है। हमारे देश के बहादुर सैनिक देश की सुरक्षा में सीमाओं पर प्रतिकूल परिस्थितियों में सतर्कता से डटे रहते हैं। हर एक सैनिक देशभक्ति की भावना से भरपूर समर्पण के साथ देश की सुरक्षा में तैनात रहता है। सैनिक हमें बाहरी आक्रमणों से ही नहीं बचाते, बल्कि प्राकृतिक आपदाओं से भी बचाते हैं। उत्तराखंड की बाढ़, लद्दाख की मूसलाधार बारिश, कश्मीर में जल-प्रलय इन सभी के दौरान उन्होंने अपनी जान दाँव पर लगाकर देशवासियों की सुरक्षा की, इससे हमें पता चलता है कि वे अपने देश को अपनी जान से ज़्यादा प्यार करते हैं। हमारी सेना का आदर्श वाक्य है– 'करो या मरो।' हमारे सैनिक इस आदर्श का पालन करते हुए देश के साथ हम सबकी रक्षा करते हैं। अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए वे अपने परिवार से दूर अनेक प्रकार की विपरीत परिस्थितियों में, दुर्गम स्थानों में, विपत्तियों को सहते हुए डटे रहते हैं। उनकी वीरता, कर्तव्य परायणता और हौसले के आगे कई बार मौत भी हार मान जाती है। सैनिक देश की रक्षा के लिए अपने समस्त हितों को भूलकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। 1965 में भारत-पाक युद्ध के दौरान केवल एक भारतीय सैनिक ने कई बार विभिन्न मोर्चों पर अनेक दुश्मनों को मारा। इसलिए हमें अपने सैनिकों के प्रति हमेशा सम्मान और सद्भाव रखना चाहिए क्योंकि उन्हीं की बदौलत हम अपने घरों में चैन से रह पाते हैं।

23. शिक्षा में सदाचार (CBSE 2017)

संकेत बिंदु– • सदाचार क्यों? कैसे • लाभ।

सदाचार शब्द 'सत् + आचार' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है– उत्तम आचरण या अच्छा व्यवहार। यह एक ऐसा आचरण है, जिसका ज्ञान हमारे व्यावहारिक जीवन से होता है। आज हमारी शिक्षा-पद्धति में यह सबसे बड़ी कमी है कि हमारे जीवन-मूल्य लक्षित नहीं होते। व्यक्ति को बचपन में जैसे संस्कार मिलते हैं, उनका असर उसके पूरे जीवन पर पड़ता है, बचपन के बहुत अच्छे विचार एवं संस्कार आगे के जीवन में उसे बहुत अच्छा इनसान बनाते हैं तथा बुरे विचार एवं संस्कार उसे भ्रष्टाचारी एवं दुराचारी इनसान बनाते हैं। अतः सदाचार को अपनाए बिना समाज व देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को कम नहीं किया जा सकता, इसलिए छात्रों को उपयोगी पुस्तकें पढ़ाई जाएँ तथा बुरे वातावरण से दूर रखा जाए। इनके बिना व्यक्ति का मानसिक विकास नहीं हो सकता। अतः शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा द्वारा शिक्षार्थियों के मनोजगत में नैतिक मूल्यों को उभार जाए। महात्मा गांधी की मान्यता के अनुसार सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा के आधार हैं। सच्चरित्र व्यक्ति ही विश्व को समृद्धि की राह दिखाता है।

24. आतंकवाद : एक समस्या (CBSE 2014)

संकेत बिंदु– • एक कलंक • दुष्प्रवृत्ति • दुष्परिणाम • समाधान।

आतंकवाद किसी एक व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र विशेष के लिए ही नहीं, अपितु पूरी मानव सभ्यता के लिए कलंक है। हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में इसका ज़हर इतनी तीव्रता से फैल रहा है कि यदि इसे समय रहते नहीं रोका गया तो यह पूरी मानव सभ्यता के लिए खतरा बन सकता है। यह एक ऐसी समस्या है जो आज पूरे विश्व में फैलती जा रही है। आतंकवाद एक ऐसी भयंकर प्रवृत्ति है, जिसके द्वारा मनुष्य अपनी उचित अथवा अनुचित माँगों को मनवाने के लिए आतंक, भय तथा मारपीट का मार्ग चुनता है। आतंकवादी हमेशा आतंक फैलाने के नए-नए तरीके आजमाते रहते हैं। भीड़ भरे स्थानों, रेल-बसों इत्यादि में बम विस्फोट करना, रेल-लाइनों की पटरियाँ उखाड़ देना, वायुयानों का अपहरण कर लेना, निर्दोष लोगों या राजनीतिज्ञ को बंदी बना लेना, बैंक डकैतियाँ करना इत्यादि कुछ ऐसी आतंकवादी गतिविधियाँ हैं, जिन्हें पूरा विश्व पिछले कुछ दशकों से सह रहा है। मौका मिलने पर बेगुनाहों को मौत के घाट उतारने में आतंकवादियों का दिल नहीं पसीजता। हमारे भूतपूर्व युवा प्रधानमंत्री स्व॰ राजीव गांधी इसी आतंक रूपी दानव की क्रूरता का शिकार बने। धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर में तो खून की नदियाँ बहना आम

बात हो गई है। सरकार को आतंकवाद को खत्म करने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए, उसे किसी भी रूप में पनपने नहीं देना चाहिए। विश्व के सभी राष्ट्रों को एक होकर इसके समूल विनाश का संकल्प लेना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी को हम एक सुनहरा भविष्य प्रदान कर सकें।

25. मीठी वाणी/मधुर वाणी

(CBSE 2009)

संकेत बिंदु– • मधुर वाणी • एक वरदान • प्रभाव और प्रयोग • जीवन में महत्व।

मीठी वाणी के प्रभाव से कोई सारे जग को अपना बना लेता है और कटुभाषी अपने ही घर में पराया हो जाता है। जहाँ मधुरभाषी को लोग दिलोजान से प्यार करते हैं, वहीं कटुभाषी के पास फटकते भी नहीं। मीठी वाणी बोलने से चारों ओर सुख उपजता है। यह किसी को वश में करने वाले मंत्र की तरह काम करता है, यदि इस वशीकरण मंत्र को प्राप्त करना है तो कठोर वचनों को त्याग दो। जहाँ कटुवाणी हृदय में ज़ख्म करती है, वहीं मधुर भाषा हृदय में आनंद, आह्लाद उत्पन्न करती है। क्या कोयल लोगों को कुछ अलग से दे जाती है या कौआ किसी से कुछ छीन लेता है। पर यह आवाज़ का ही जादू कहा जाएगा कि लोग कोयल की बोली सुनने के लिए तरसते हैं, वसंत ऋतु आने का इंतज़ार करते हैं और उसकी वाणी सुनकर प्रफुल्लित होते हैं। किसी भी मधुरभाषी को कोयल की उपमा दी जाती है जबकि सहज ही सुलभ कौए की काँव-काँव को सभी नापसंद करते हैं। मधुर वाणी जहाँ दूसरों को आनंद की अनुभूति कराती है, वहीं खुद हमारा मन भी संतुष्टि और शीतलता से भर देती है। मधुर वाणी बोलने वाले और सुनने वाले दोनों को अच्छी लगती है, मनुष्य को जीवन में उन्नत बनने के लिए मधुर भाषण की बड़ी आवश्यकता है। इससे समाज में प्रतिष्ठा, गौरव और ख्याति प्राप्त होती है।

अभ्यास

दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए–

1. आज की युवा पीढ़ी

संकेत बिंदु– • भौतिकता की ओर आकर्षण • भारतीय संस्कृति के प्रति घटती आस्था • कुछ कर गुज़रने की हिम्मत।

2. युवाओं के लिए मतदान का अधिकार

संकेत बिंदु– • मतदान का अधिकार क्या और क्यों • जागरूकता • आवश्यकता • सुझाव।

3. जीवन एक अग्निपथ

संकेत बिंदु– • आरक्षण क्यों? • आरक्षण की सुविधाएँ • बदलती परिस्थितियाँ • समान अधिकार।

4. मानवता : सबसे श्रेष्ठ धर्म

संकेत बिंदु– • मानवता क्या है? • महापुरुषों का उल्लेख • लाभ।

5. विज्ञान के आधुनिक चमत्कार

संकेत बिंदु– • विज्ञान का अर्थ • आधुनिक आविष्कार • आविष्कारों की उपियोगिता • लाभ-हानि।

6. ज़हरीले धुएँ में डूबी दिल्ली

संकेत बिंदु– • कारण • समस्याएँ • कठिनाइयाँ • बचाव।

7. मित्रता

संकेत बिंदु– • मित्रता की आवश्यकता • मित्र कैसे बनाएँ? • लाभ।

8. पुस्तकालय

संकेत बिंदु– • अच्छे पुस्तकालय की पहचान • लाभ • अधिकाधिक उपयोग।

❑❑❑